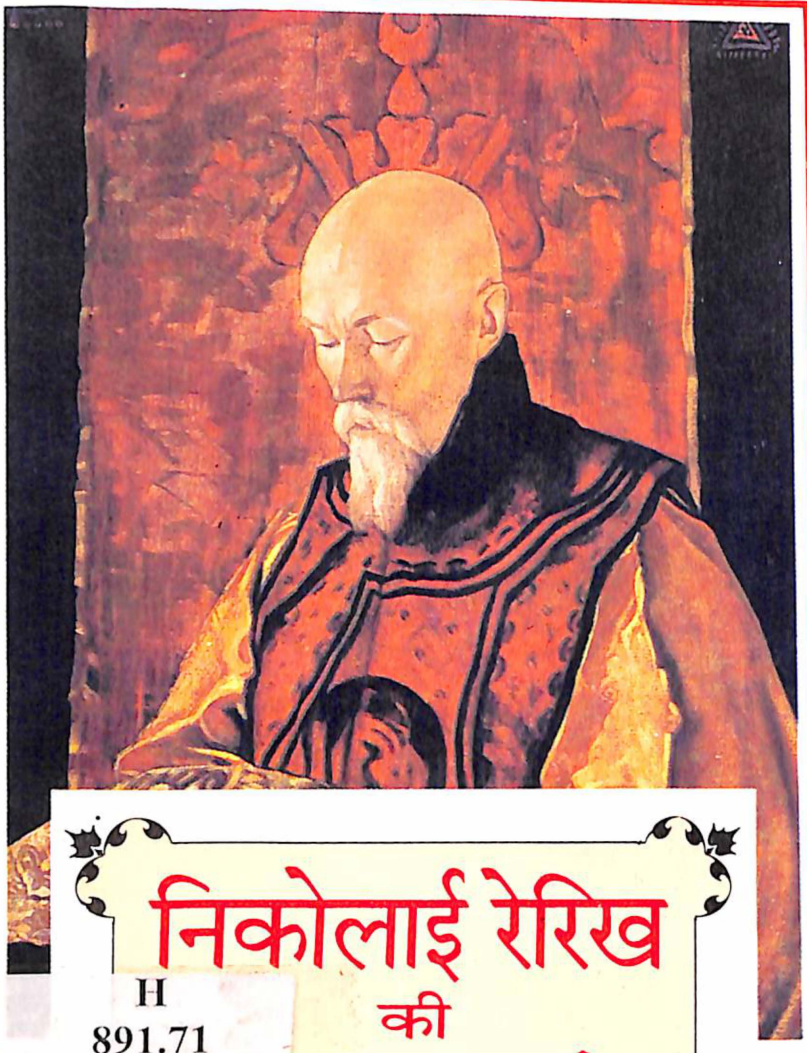

निकोलाई रेरिख की कविताएँ

H
891.71
R 628 S

INDIAN INSTITUTE OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY SIMLA

Nikolai Roerich

निकोलाई रेरिख की कविताएँ

Tr. by Varyam Singh

अनुवाद : वरयाम सिंह

Roerich Adhyayan Parishad

रेरिख अध्ययन परिषद New Delhi

नयी दिल्ली-110 067

CATALOGUED

Library IIAS, Shimla
H 891.71 R 628 S
G2046

प्रकाशक
रेरिख अध्ययन परिषद
1318, पूर्वांचल,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय,
नयी दिल्ली-110 067

© हिन्दी अनुवाद : डॉ० वरयाम सिंह

प्रथम संस्करण 1995

मूल्य : 10 रुपये

अक्षर संयोजन : निधि लेज़र प्वाइन्ट, दिल्ली-32

मुद्रक : विकास ऑफसेट, दिल्ली-32

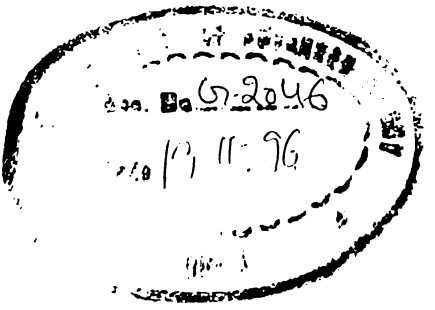

इस पुस्तक की बिक्री से प्राप्त राशि का उपयोग उरुस्वाति हिमालय अध्ययन संस्थान, नग्गर कुल्लू (हि० प्र०) के उत्थान एवं संरक्षण के लिये किया जायेगा।

कविता क्रम

क्रम एक : पवित्र चिन्ह

पवित्र चिन्ह 9
देख सकेंगे 11
भिखारी 13
पगडंडियाँ 15
विश्वास करूँ ? 16
वह कल 18
समय 20
भीड़ में 21
शिखर पर 22
व्यर्थ 23
नृत्य में 24
कल देखोगे 25
चाबियों की रखवाली 26
हमारा रास्ता 28

क्रम दो : जिसे प्राप्त है आशिर्वाद

हमारा समय 29
दूर ले जाने वाला 31
सुबह 32
जिन्हें छोड़कर जा रहा हूँ 33
आलोक 34
तुम्हारी मुस्कराहट 36
तुम्हें समझे विना 37
सुरक्षित रखूँगा 38
प्रेम 39
देखता आ रहा हूँ 40
हीरा 41
गह्वर 42
दूर नहीं गये 44
हमारे लिए ? 46
खुशियाँ मना, ओ मन 47
और प्रेम 48

क्रम तीन : बालक के लिये

सजाए रखो 50
एक दिन 51
सहायता देगा 53
सबके सामने 54
ईश्वर भला करेगा 55
क्यों नहीं मार सकते ? 56
नहीं कर सकते 57
गिनती न करना 58
अनन्त 59
जहाँ भेजा गया था 60
मिट्टी के नीचे 61
दुहराने लगो 62
चिरंतन के विषय में 63

निकोलाई रेरिख

बहुआयामी और बहुमुखी प्रतिभा के धनी निकोलाई रेरिख का जीवन अत्यंत घटनापूर्ण रहा है। अपनी मातृभूमि रूस में बिताये आरंभ के चालीस वर्ष रूस और रेरिख की नियति में युगांतकारी घटनाओं के वर्ष रहे हैं। 1904 का रूस-जापान युद्ध, युद्ध में रूस की पराजय, 1905 की प्रथम रूसी क्रांति, क्रांति की असफलता के बाद घोर प्रतिक्रियावाद का दौर, प्रथम विश्वयुद्ध, 1917 की फरवरी और अक्तूबर क्रांतियों जैसी घटनाओं ने रेरिख के चिंतन और कला को विशिष्ट अंतर्वस्तु प्रदान की है। जीवन के प्रति सक्रिय दृष्टिकोण के समर्थक रेरिख अपने अनुसंधान कार्य में न केवल रूस के कोने-कोने में गये बल्कि क्रान्ति के बाद अनेक वर्ष मध्य एशिया के देशों में भयानक परिस्थितियों मे भ्रमण और अध्ययन में बिताये।

रेरिख केवल उत्कृष्ट और मौलिक चित्रकार ही नहीं बल्कि अनुभवी पुरातत्ववेता, कवि, लेखक और सामाजिक कार्यकर्ता भी रहे हैं। अपने समय की सामाजिक-राजनैतिक समस्याओं, संस्कृति के अतीत के और वर्तमान, विभिन्न कला और साहित्य आंदोलनों के प्रति वह अत्यंत सचेत और संवेदनशील रहे। संस्कृति की मनुष्य को मनुष्य बनायें रखने की क्षमता और सामर्थ्य पर रेरिख को जीवन पर्यंत अटूट विश्वास रहा और संभवतः इसी विश्वास ने ही उन्हें दूसरे क्षेत्रों की संस्कृति का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया। यूरोप केंद्रित चिंतन पद्धतियों से मुक्त निकोलाई रेरिख गैर यूरोपीय देशों और जातियों की संस्कृति में उच्च मानवीय मूल्यों का दर्शन पा सकने में सफल रहें। इसीलिए रेरिख उच्चतम अर्थों में सच्चे संस्कृतिकर्मी के रूप में विश्वभर में आदर पा सके।

निकोलाई रेरिख का जन्म 1874 में रूस की तत्कालीन राजधानी और संस्कृति केंद्र पीटर्सबर्ग में एक सुशिक्षित और सम्पन्न परिवार में हुआ। बचपन में ही उनमें कला और इतिहास में रुचि पैदा हुई। कला अकादमी में शिक्षा ग्रहण

करने के साथ-साथ वह पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय के विधि संकाय में भी पढ़ाई करते रहे। पिता की इच्छा थी कि निकोलाई शिक्षा के बाद वकील बने, पर अपने समय के प्रख्यात चित्रकार स्तासोव के प्रोत्साहन पर युवा निकोलाई कला साधना में जुट गये। अपने ऐतिहासिक विषयवस्तु पर आधारित चित्रों से वह प्रख्यात कला पारखी त्रत्याकोव और तोल्स्तोय का ध्यान और प्रशंसा पाने में सफल रहे। रेरिख की कला साधना चित्रकारिता तक ही सीमित नहीं रही बल्कि प्राचीन रूस के कला-वैभव के सुव्यवस्थित अध्ययन तक विस्तार पाती रही।

प्राचीन घटनाओं और व्यक्तियों के चित्रण को रेरिख ने नये आयाम प्रदान किये। उनके चित्र ऐतिहासिक तथ्यों की व्याख्या मात्र नहीं बल्कि इन ऐतिहासिक तथ्यों को मानव नियति और मानव इतिहास के परिप्रेक्ष्य में देखते हुए नया अर्थ और प्रासंगिकता प्रदान करते हैं। इन चित्रों में प्राचीन स्लाव और वाइकिंग जातियों के भावना जगत् की विविधता की रोचक झलक मिलती है। स्लाव जातियों की प्राचीन संस्कृति की खोज ने उन्हें मध्ययुगीन यूरोप और पूरब के देशों की संस्कृति की ओर आकृष्ट किया।

प्रथम विश्वयुद्ध के दिनों में रेरिख विभिन्न धर्मों के सारतत्व का अध्ययन करने लगे। युद्ध की विनाशलीला के प्रति वह तटस्थ नहीं रह सके। युगों से मनुष्य जाति जिन संस्कृति और कला मूल्यों का निर्माण करती आ रही है उसे संहार से कैसे बचाया जाये—यह प्रश्न उन्हें इन्हीं दिनों से उद्वेलित करने लगा और जीवन पर्यंत उद्वेलित करता रहा। मंगोलिया, तिब्बत, सिक्किम व यूरोप के कई देशों का भ्रमण करने के बाद रेरिख ने 1928 में स्थाई रूप से हिमाचल प्रदेश की कुल्लू घाटी के एक गाँव नग्गर में रहने का निश्चय किया। यहीं उन्होंने अपने पुत्रों के सहयोग से हिमालय अध्ययन संस्थान 'उरूस्वाति' की भी स्थापना की। संस्थान का उद्देश्य मुख्यतः भारत और हिमालय से लगे देशों का अध्ययन करना था, विशेषकर संस्कृति और कला पक्ष का।

भारत के प्राचीन इतिहास और आख्यानों के प्रभाव की झलक यों रेरिख की कुल्लू प्रवास से पहले की अनेक कला-कृतियों में मिलती है, पर हिमालय अपनी समस्त विराटता, विविधता और सौंदर्य के साथ कुल्लू के प्रवास के बाद ही उनके कृतित्व की केंद्रीय अंतर्वस्तु बनता है। प्रवास के ये वर्ष अध्ययन चिंतन और कला की दृष्टि से अत्यंत फलप्रद रहे। यहीं रहते उन्होंने रूसी

संस्कृति और कला पर अनेकों पुस्तकें और लेख लिखे।

दूसरे विश्वयुद्ध के दिनों में रेरिख अपने लेखन के माध्यम से, युद्ध विरोधी आह्वानों से शांतिवादी जनता को प्रेरणा देते रहे। 1942 में उनके यहाँ पंडित जवाहरलाल नेहरू अपने परिवार के साथ रुके। 1947 में नग्गर में उनका देहांत हुआ।

रेरिख की कृतियों में प्रकृति एक नया आध्यात्मिक अर्थ ग्रहण करती है। हिमाच्छादित पर्वत शिखर मनुष्य में पवित्रता और शुचिता की भावना पैदा करते हैं। हिंदू देवताओं, प्राचीन स्लाव व रूसी संतों के चित्र मनुष्य जाति के आध्यात्मिक अन्वेषण और साधना के विविध रूप प्रस्तुत करते हैं।

रेरिख प्रखर चिंतक और चित्रकार होने के साथ-साथ समर्थ कवि भी थे। पर उनके रचनात्मक व्यक्तित्व का यह पक्ष अधिक उजागर नहीं हुआ है। उनकी कविताओं का पहला संकलन 'त्स्वेती मोरी' यों तो 1921 में प्रकाशित हो सका पर संकलन की अधिकांश रचनाओं से प्रबुद्ध रूसी पाठक पहले ही परिचित हो चुका था। कविताएँ उन्होंने अधिक नहीं लिखीं पर उनके कृतित्व में इन कविताओं का विशेष स्थान है। उनकी कविताएँ रूसी दार्शनिक कविता की समृद्ध परम्परा को आत्मसात करते हुए उसे नई कलात्मक और वैचारिक उच्चता प्रदान करती हैं। संकलन की काव्यगत नव्यता, इस दृष्टि से भी विस्मयकारी है कि रेरिख अपने समय की रूसी कविता की छंद, लय, मात्रा और वाक्य रचना की अनेकों रूढ़ियों को तोड़ने का साहस कर सके। जहाँ तक वैचारिक पक्ष का संबंध है इन कविताओं में प्राच्य अध्यात्मवाद, विवेकानंद और रवींद्रनाथ ठाकुर के दर्शन का प्रभाव भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

प्रस्तुत संकलन में मात्र तैंतालीस कविताओं के अनुवाद दिये जा रहे हैं। आशा है कि रेरिख की काव्यात्मक विशिष्टता की हिंदी के पाठक को हल्की-सी झलक तो मिल ही सकेगी।

वरयाम सिंह
रूसी अध्ययन केंद्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

क्रम एक : पवित्र चिन्ह

पवित्र चिन्ह

हम नहीं जानते। पर वे जानते हैं।
पत्थर जानते हैं
यहाँ तक कि पेड़ भी।
उन्हें याद है
याद हैं जिन्होंने पहाड़ों और नदियों को नाम दिये
नाम दिये स्मरणातीत देशों को,
ज्ञानातीत शब्द प्रदान किये,
निर्मित किये अनेकों नगर।
वे सम्पन्न हैं अर्थ-वैभव से
और महान कार्यों से पूर्ण
हर जगह अवतरित हुए हैं महान नायक।

'जानना' शब्द मीठा होता है
और 'याद रखना'- भयावह।
जानना और याद रखना
याद रखना और जानना
अर्थात् विश्वास करना
उड़ा करते थे वायुयान
बरसा करती थी तरल आग
चमका करती थीं चिंगारियाँ
जन्म और मृत्यु की।

आत्मा की शक्ति से
उठ खड़े होते थे पत्थरों के ढेर
ढाली जाती थी तलवारें चमत्कारी

ज्ञान से भरे रहस्यों को
सुरक्षित रखा है ग्रंथों ने ।

पुनः स्पष्ट हो गया है सब कुछ
नयी—नयी है हर चीज़,
गाथाओं ने धारण कर लिया है जीवन का रूप,
और हम पुनः जीने लगे हैं
हम पुनः बदल जायेंगे
और पुनः मिट्टी में मिल जायेंगे।

महान 'आज' निष्प्रभ पड़ जायेगा कल।
पर प्रकट होंगे पवित्र चिन्ह।
जब ज़रूरी होगा
उन्हें कोई नहीं देखेगा।
किसे मालूम ?
पर वे जीवन का निर्माण करेंगे।
कहाँ हैं वे
पवित्र चिन्ह ?

देख सकेंगे

हम पवित्र चिन्ह ढूँढ़ने जा रहे हैं
खामोश और सावधान।
लोग चल रहे हैं, हंस रहे हैं
पीछे चलने के लिए कह रहे हैं
असंतोष में कुछ लोग तेज चल रहे हैं
और कुछ हमारे पास है वे छीनना चाहते हैं
राहगीरों को मालूम नहीं—
हम पवित्र चिन्ह ढूँढ़ने निकले हैं।

धमकियाँ देने वाले हमें छोड़ आगे चल देंगे
उन्हें वहुत काम करने को हैं
पर हम ढूँढ़ते रहेंगे पवित्र चिन्ह
किसी को मालूम नहीं
कहाँ छोड़ गया है प्रभु अपने पवित्र चिन्ह।

सवसे विश्वसनीय तो यही है
वे रास्ते में स्तम्भों पर होंगे
या फूलों में
या नदी की लहरों में।

हमारा विचार है उन्हें ढूँढ़ा जा सकता है
बादलों की मेहरावों में
सूर्य के आलोक में
चंद्रमा के उजाले में
लीसे और अलाव की रोशनी में
हम ढूंढ़ते रहेंगे पवित्र चिन्ह।

हम बहुत समय से चलते आ रहे हैं
ध्यान से देख रहे हैं
हमारे पास से बहुत सारे लोग निकल चुके हैं
हमें लगता है उन्हें ज्ञात है
पवित्र चिन्ह ढूँढ़ने के आदेश।

अँधेरा हो रहा है
अपना रास्ता पहचानना कठिन हो रहा है।
समझ नहीं आ रही हैं ये जगहें।
कहां हो सकते हैं वे पवित्र चिन्ह ?

आज हम उन्हें शायद ढूँढ़ नहीं पायेंगे
पर कल उजाला होगा,
मैं जानता हूँ
हम उन्हें देख सकेंगे।

भिखारी

आधी रात आगमन हुआ हमारे सम्राट का।
चला गया वह खामोशी के भीतर। ऐसा कहा उसने।
सुवह भीड़ के वीच चला आया सम्राट।
और हमें मालूम नहीं था ····
हम उसे देख भी नहीं सके।
हमें ज्ञात कर लेने चाहिए थे आदेश।
कोई वात नहीं, भीड़ के वीच हम
उसके पास जायेंगे, वतायेंगे और पूछेंगे।

कितनी वड़ी है भीड़ ! कितनी सड़कें !
कितनी राहें और कितनी पगडंडियाँ !
वह वहुत दूर भी तो जा सकता था।
क्या वह पुनः वापिस आवेगा खामोशी में ?
रेत पर सव जगह निशान हैं पाँवों के।
हम पहचान लेंगे देर-सवेर—
किसके पाँवों के निशान हैं ये।
एक बच्चा जा रहा था इधर से।
यह देखो—वोझ उठाये एक औरत।
और इधर—वार-बार गिरता एक अपंग।
सचमुच, क्या हम सफल नहीं होंगे पहचानने में ?

आखिर सम्राट, के पास तो हमेशा लाठी रहती थी।
आओ, पहचान लें उसका सहारा लिए लोगों के निशान।
यह रहा जुझारू अंत।
सम्राट की लाठी कुछ अधिक मोटी है
और चाल—कुछ अधिक धीमी।
ठीक निशाने पर पड़ेगी इस लाठी की मार।

कहाँ से टपक पड़े हैं इतने सारे लोग ?
जैसे कि सबने तय किया हो
पार करना हमारा रास्ता।
यह लो—हमने तेज कर दिये हैं अपने कदम।
मुझे दिखाई दे रहे हैं वे भव्य पद् चिन्ह।
और साथ में वह शांतिप्रिय लाठी।
यह शायद हमारा सम्राट है।
हम उस तक पहुँच जावेंगे और पूछेंगे।
धकियाते हुए हम पीछे छोड़ आये हैं लोगों को।
हम जल्दी में थे।
पर लाठी लिये चलता हुआ
यह सम्राट नहीं
भिखारी था।

पगडंडियाँ

हम पहुँच जायेंगे जंगल में सम्राट तक।
हमें बाधा नहीं पहुँचायेंगे लोग।

वहाँ हम उसे पूछेंगे।
पर सम्राट तो हमेशा अकेला चलता है
और जंगल भरा पड़ा है पगडंडियों से।
मालूम नहीं, कौन गये हैं उन पर से।
रात के निवासी उन पर से जा रहे थे
चले गये वे चुपचाप।
दिन में निर्जन रहता है जंगल,
चुप रहते हैं पक्षी
और हवा भी— चुप।

बहुत दूर निकल गया है हमारा सम्राट
चुप पड़ गई हैं सब राहें और
पगडंडियाँ।

विश्वास करूँ ?

अंत में हमें ज्ञात हुआ—
कहाँ गया था हमारा सम्राट।
तीन मीनारों वाले चौराहे पर
वह शिक्षा देगा।
वहाँ वह आदेश देगा।
एक वार वतायेगा।
दूसरी वार हमारे सम्राट ने कभी कुछ नहीं वताया।

चौक पर पहुँचने की जल्दी है हमें।
हम वीच का रास्ता लेंगे
जल्दवाजी कर रही भीड़ से हट कर।
हम निकल आएँगे वाहर
हवाई मीनार की नींव की तरफ।
वहुतों को ज्ञात नहीं है यह रास्ता।
पर हर जगह लोग ही लोग हैं।
भरे पड़े हैं वीच के सव रास्ते।
सिमट रहे हैं लोग वाहर के द्वारों के पास।

वह पहले से ही बोल रहा है वहाँ
इससे आगे जा नहीं पाएँगे हम।
किसी को भी ज्ञात नहीं कौन था।
यहाँ आने वाला सवसे पहला आदमी।
दिखाई देने लगी है मीनार
पर वह वहुत दूर है।

कभी-कभी लगता है कि गूँजने लगते हैं

सम्राट के शब्द। पर नहीं
सम्राट के शब्द किसी को सुनाई नहीं देते।
ये तो लोग हैं जो प्रेषित कर रहे हैं
उन्हें एक दूसरे को।
एक स्त्री—सैनिक को।
सैनिक—सामंत को।
मुझे प्रेपित किया है पड़ोस के मोची ने।
पता नहीं उसने ठीक से सुने भी हैं वे शब्द
उस व्यापारी से जो खड़ा था देहरी पर ?
क्या मैं उन पर
विश्वास करूँ ?

वह कल

मुझे मालूम थी बहुत-सी उपयोगी चीज़ें
पर अब मैं उन सबको भूल चुका हूँ।
लुटे हुए यात्री की तरह
अपनी संपत्ति खोये निर्धन की तरह
मुझे याद आता है अपना वैभव
जिसका मैं कभी मालिक हुआ करता था।

याद आता है अचानक, बिना सोचे
बिना जाने कि कब प्रकट होगा वह मृत ज्ञान।
कल ही तो मैं बहुत कुछ जानता था
पर एक रात की अवधि में ही
सब चीज़ों पर अंधकार छा गया है
यह सच है कि दिन महान था
और रात—लंबी और अंधकार भरी।

खुशबुओं से भरी सुबह आई।
सब कुछ था सुंदर और स्वच्छ।
नये सूर्य से आलोकित हो
मैं भूल गया, खो बैठा
जो कुछ मैंने जुटा रखा था।

नये सूर्य की किरणों के नीचे
मेरा ज्ञान पिघल गया, गड्ड-मड्ड हो गया
मैं अब पहचान नहीं पाता
अपने मित्रों, अपने दुश्मनों को।
मुझे नहीं मालूम कब सामना होगा खतरों से,
कब रात होगी—मालूम नहीं।

मैं नये सूर्य का स्वागत नहीं कर सकूँगा।
इस सारे वैभव का
मैं कभी मालिक था
पर अब वैभवहीन हूँ।

अपमानजनक है यह कि मैं पुनः जानने लगूँगा वह कल
जिसकी पहले कभी जरूरत नहीं समझी।

बहुत लंबा है आज का दिन
पता नहीं कब आयेगा—
वह कल ?

समय

भीड़ में चलना हमारे लिए कठिन हो गया है
कितनी ही शक्तियाँ हमारी शत्रु हैं
और कितनी ही आकांक्षाएँ।
उतर आई हैं अशुभ शक्तियाँ
पथिकों के कंधों और चेहरों पर।
हम निकल आएँगे किनारे की तरफ
उस पहाड़ी पर जहाँ खड़ा है एक प्राचीन स्तंभ,
हम बैठेंगे वहाँ।
उतर आएँगी सारी शक्तियाँ
और हम प्रतीक्षा करेंगे।
यदि पावन चिन्हों के विषय में
कोई समाचार मिले
तो हम भी प्रयास करेंगे।
और यदि कोई उन्हें हमारे पास लाया
तो हम सम्मानपूर्वक खड़े हो जायेंगे।
हम देखेंगे आँख खोलकर,
कान खोलकर सुनेंगे।
हम समर्थ होंगे, कामना करेंगे
और निकल आयेंगे बाहर जब आयेगा वह
समय।

भीड़ में

तैयार है मेरा परिधान।
अव मैं मुखौटा पहनूँगा।
हैरान न होना, मेरे मित्र,
यदि डरावना लगे तुम्हें यह मुखौटा।
आखिर यह मात्र छद्ममुख ही तो है।

निकलना होगा हमें घर से वाहर।
किससे होगी हमारी भेंट ?
हमें यह मालूम नहीं
मालूम नहीं अपने को दिखाने के उद्देश्य।
ढाल लेकर रक्षा करो अपनी
हत्यारों के प्रहारों से।

तुम्हें यह मुखौटा अच्छा नहीं लगता है क्या ?
उसकी शक्ल क्या मुझसे नहीं मिलती ?
भौंहों के नीचे क्या आँखें दिखाई नहीं दे रहीं ?
माथा कुछ वड़ा बना है क्या ?
शीघ्र ही हम उतार देंगे छद्ममुख।
और मुस्करा देंगे एक दूसरे की तरफ।
अव हम शामिल हो जाएँगे
भीड़ में।

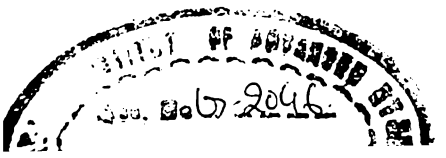

शिखर पर

मैं एक वार फिर आवाज़ दूँगा
कहाँ चले गये हो तुम मुझे छोड़कर ?
एक वार फिर से
सुनाई नहीं पड़ रही तुम्हारी आवाज़।

चट्टानों के वीच कहीं
चुप-सी पड़ गई है तुम्हारी आवाज़,
अलग नहीं कर पा रहा हूँ उसे
पतली टहनी के गिरने
और पक्षी को अचानक उड़ जाने की आवाज़ से।

कहीं खो गई है
तुम्हें पुकारती मेरी आवाज़ ?

मालूम नहीं तुम जाओगे या नहीं
पर शिखर पर जाने की
वहुत इच्छा है मेरी।

पत्थर पहले ही नग्न हो चुके हैं,
मुरझा चुकी है धूपचंदन,
कठिन हो रहा है उसके लिए खड़े रहना
और काई तो जैसे गायब हो गई है।

मेरे काम भी आ सकती थी तुम्हारी रस्सी
पर मैं अकेला होते हुए भी चढ़ूँगा
शिखर पर।

व्यर्थ

दिखाई नहीं दे रहे पवित्र चिन्ह।
आराम करने दो अपनी आँखों को !
जानता हूँ—वे थक गई हैं।
बंद कर दो उन्हें।
मैं देखूँगा अब तुम्हारे बदले
जो देखूँगा—बताऊँगा।

सुनो !
हमारे चारों ओर वही मैदान हैं
फड़फड़ा रहे हैं प्रौढ़ झाड़।
इस्पात की तरह चमक रही हैं झीलें
और पत्थर पड़ गये हैं निष्प्राण।
चरागाहों पर से चमक रहे हैं वे
चमक रहे हैं शीतल आभा में।
उल्लासहीन हैं बादल
बैठ गये हैं वे अनगिनत तहों में।
वे जानते हैं और चुप हैं
और पहरा दे रहे हैं।
दिखाई नहीं दे रहे हैं पक्षी
न भागता हुआ कोई जानवर।
पहले की तरह कोई भी नहीं है यहाँ,
दिख नहीं रहा कुछ भी कहीं
एक बिंदु तक नहीं,
मुसाफिर—एक भी नहीं।
समझ नहीं आ रहा
नहीं कुछ दिखाई नहीं दे रहा
अपनी आँखों पर दबाव डालना भी
व्यर्थ हुए बिना न रहता।

नृत्य में

डरो,
जब हरकत में आने लगें चुप बैठी चीज़ें,
तूफ़ानों में बदल जायें रुकी हुई हवाएँ,
लोगों की बातें भर जाएँ अर्थहीन शब्दों से !

डरो,
जब ज़मीन के भीतर छिपाने लग जाएँ लोग अपना धन,
जब लोग उसी वैभव को सुरक्षित मानने लग जाएँ
जिसे उन्होंने अपने शरीर पर धारण कर रखा हो,
जब चिर अर्जित ज्ञान का
विनाश कर दे भीड़ खुशी खुशी से,
जब आसान हो जाए धमकियों को अमल में लाना,
जब कुछ भी न बचे
जिस पर लिखा जाता पूर्व अर्जित ज्ञान,
जब भुरभुराने लग जाएँ लिखने के कागज़
और शब्द हो जाएँ निष्करुण, निष्ठुर !

मेरे पड़ोसियों,
ठीक नहीं है तुम्हारे जीवन का ढाँचा,
बदल डाला है तुमने यहाँ का सब कुछ
आज से आगे कहीं भी नहीं है कोई रहस्य,
अपनी बदकिस्मतियों के साथ
चल दिये हो तुम दुनिया को जीतने।
कुरूप से भी कुरूप स्त्री को
वांछित स्त्री की संज्ञा दे सकता है तुम्हारा पागलपन।
ओ नाचते हुए लघु चालाक लोगो,
तुम क्या सचमुच तैयार हो
अपने को पूरी तरह नृत्य में डुबोने के लिए !

कल देखोगे

किस चीज़ से तप रहा है मेरा चेहरा ?
चमक रहा है सूर्य
अपनी गर्मी से भर रहा है हमारे उद्यान को।

किस चीज़ का शोर है यह ?
यह शोर समुद्र का है
चट्टान के पीछे वह दिखाई नहीं देता।

कहाँ से आ रही है बादाम की यह महक ?
वर्ड चेरी के पौधे खिल उठे हैं पूरे के पूरे।
सफेद रंग में डूब गये हैं सब पेड़।
खिल उठे हैं सेब
सब कुछ चमकने लगा है विविध रंगों में।

यह क्या है हमारे सामने ?
यह तुम खड़े हो टीले पर।
हमारे सामने से उतरता है उद्यान।
चरागाह के पीछे चमक रही है खड़ी की नीलिमा।
उस ओर पहाड़ हैं और जंगल।
अंधकार में डूब रहे हैं चीड़ से ढँके पहाड़।
नीले विस्तार में खो गई हैं आकृतियाँ।

कब देख पाऊँगा मैं यह सब ?

कल देखोगे।

चाबियों की रखवाली

आज मैं बनूँगा जादूगर,
अपनी असफलताओं को
बदल डालूँगा सफलताओं में।

मौन धारण कर रखा था जिन लोगों ने
वे बातें करने लगे हैं।
पीछे मुड़ने लगे हैं
जिन्हें आगे जाना था।
डर गये डरावने लोग,
धमकियाँ देने वाले गिड़गिड़ाने लगे।

फाख्ताओं की तरह विचार आये
और रुक गये संसार पर शासन करने के लिए।
सबसे अधिक शांत थे जो शब्द
तूफानों को लेते आये अपने साथ।
और तुम चलते रहे उसकी छाया की तरह
जिसे अभी अस्तित्व में आना था।

तुम अब एक बच्चे का रूप धारण करोगे
ताकि बाधा न पहुँचाये तुम्हें किसी तरह की लज्जा।
तुम बैठे रहे बाहर की देहरी पर
जिस तक पहुँच सकते थे हर तरह के ठग।
तुम पूछते थे—कौन ठगना चाहता है मुझे ?
इसमें हैरानी की क्या बात ?
सफल शिकारी ढूँढ़ लेगा
अपना शिकार
बिना डरे।

पर सफलता प्राप्त कर
यहाँ से जाते हुए मैं जानता हूँ
तुमसे से हर एक से मैं मिल नहीं पाया हूँ
अधूरी रह गई हैं अच्छी मुलाकातें।
वहुत से भले लोग जा चुके हैं
या अभी तक यहाँ पहुँचे नहीं।
मैं उन्हें जानता नहीं था।
मैं नये नये वस्त्र पहनकर
वैठा रहा तुम्हारे वीच।
तुम भी धारण करते रहे परिधान तरह तरह के
और चुपचाप रखवाली करते रहे
द्वारों की जंग लगी
चावियों की।

हमारा रास्ता

ओ यात्रियों, अव हम गाँव का रास्ता ले रहे हैं।
खेत और जंगल के वाद
एक एक कर गाँव आ रहे हैं।

ढोर चरा रहे बच्चे
हमारी तरफ आ रहे हैं।
एक वच्चा हमें भोजपत्र पर वेर परोस रहा है
खुशवूदार घास का पूला पेश कर रही है एक वच्ची
और एक छोटे से वच्चे ने
हमारी खातिर धारीदार छड़ी का मोह त्याग दिया है।
उसका ख्याल है कि यह छड़ी
हमारे सफर को आसान वनायेगी।

हम अव आगे चल देंगे।
भविष्य में हम कभी नहीं मिल पायेंगे इन वच्चों से।

बंधुओं, अभी हम गाँव से ज्यादा दूर नहीं निकले हैं
पर इन उपहारों से तुम अभी से ऊवने लगे हो।
विखेर दी है तुमने खुशवूदार घास,
तोड़ दी है भोजपत्र से वनी टोकरी।
खाई में फेंक दी है वच्चे की दी हुई छड़ी।
इस लंवे सफर में उसकी क्या ज़रूरत।

पर वच्चों के पास देने को कुछ और था ही क्या !
उनके पास जो भी श्रेष्ठ था हमें भेंट किया।
ताकि कुछ शोभा पा सके
हमारा सफर।

क्रम दो : जिसे प्राप्त है आशीर्वाद

हमारा समय

उठो मित्र, समाचार मिल चुका है
पूरे हो गये हैं तुम्हारे विश्राम के क्षण।
अब मालूम हुआ है मुझे
कहाँ खो गया था
पवित्र चिन्हों में से एक वह चिन्ह।
सोचो तो कितनी खुशी होगी हमें
यदि ढूँढ़ सकें हम वह चिन्ह !

हमें निकल जाना होगा सूरज निकलने से पहले
पूरी करनी होंगी तैयारियाँ एक रात में।

देखो तो कैसा है आज की रात का आकाश !
पहले कभी नहीं दिखा वह इतना सुंदर।
उसका यह रूप मुझे याद नहीं रह सकेगा
अभी कल ही तो आसन्दी
इतनी उदास थी और इतनी निष्प्रभ,
सहमी सहमी टिमटिमा रही थी चित्रा
और शुक्र ने तो दर्शन ही नहीं दिये,
पर अब सब चमकने लगे हैं
चमक उठे हैं सप्तऋषि और स्वाति।
दूर नक्षत्र मालाओं के पीछे
चमकने लगे हैं नये नये तारे
दिखने लगा है

आकाशगंगाओं का स्पष्ट और पारदर्शी धुँधलापन।
क्या तुम्हें दिखाई नहीं दे रहा यह रास्ता
जिस पर से हमें खोज निकालना है कल उसे
जाग उठे हैं आकाश पर अंकित अक्षर।
उठाओ अपनी संपदा !
अपने साथ हथियार ले जाने की ज़रूरत नहीं।
जूते कस कर पहनना
कस कर बाँधना अपनी कमर
पत्थरों से भरा होगा हमारा रास्ता
चमकने लगा है पूरब।
समय आ गया है अब हमारा।

दूर ले जाने वाला

ओ रात की खामोशी में आने वाले,
कहते हैं कि तू अदृश्य है
पर सच यह नहीं।

मैं सैकड़ों लोगों को जानता हूँ
जो तुझे देख चुके हैं
भले ही सिर्फ एक बार।
मूर्ख और विवेकहीन हैं वे
जो पहचान नहीं पाये तेरा विविध और बदलता रूप।

हमारे जीवन में तू कोई रुकावट नहीं डालना चाहता,
डराना नहीं चाहता किसी भी तरह,
चुप और खामोश तू
निकल जाता है पास से।

तेरी आँखें चमक सकती हैं,
गरज सकती है तेरी आवाज़।
काली चट्टान को भी
भारी पड़ सकती हैं तेरी बांहें।
पर तू चमकता नहीं
गरजता भी नहीं
न ही तू किसी का विनाश करता है।

तू जानता है कि विनाश करना
चुप रहने से कहीं अधिक जघन्य है,
तू जानता है कि खामोशी
गर्जनाओं से कहीं अधिक आवाज़ करती है।
तू जानता है, तू जो खामोशी में आता है
और दूर ले जाता है।

सुबह

मैं न जानता हूँ और न जान सकता हूँ
जब मुझे इच्छा होती है सोचता हूँ—
क्या किसी की इच्छा
मेरी इच्छा से बड़ी हो सकती है ?

जब ज्ञान होता है सोचता हूँ—
क्या किसी की ज्ञान
मेरे ज्ञान से अधिक सशक्त हो सकता है ?

जब मैं समर्थ होता हूँ सोचता हूँ—
क्या किसी का सामर्थ्य
मेरे सामर्थ्य से अधिक श्रेष्ठ और अर्थपूर्ण हो सकता है ?

और यह मैं रहा
न मुझे ज्ञान है
न मुझमें कोई सामर्थ्य।

ओ खामोशी में आने वाले,
तू मुझे चुपके से बता—
मैंने जीवन में किस चीज़ की इच्छा की
और क्या प्राप्त किया ?

मेरे सिर पर अपना हाथ रख
कि मैं पुनः समर्थ हो सकूँ
और इच्छा कर सकूँ—
रात में जिसके लिए कामना की
वह मुझे याद आ सके
सुबह !

जिन्हें छोड़कर जा रहा हूँ

यात्रा पर निकलने की
पूरी हो चुकी हैं तैयारियाँ !
जो कुछ मेरा था मैंने उसे वहीं रहने दिया
उसे तुम ले लेना, मित्रों !

अब मैं अंतिम बार अपने घर की परिक्रमा करूँगा
देखूँगा चीज़ों को फिर एक बार।
मित्रों की चित्रों को देखूँगा।

मैं पहले से ही जानता हूँ
मेरा यहाँ कुछ भी नहीं बचा
वह सब कुछ जो मुझे रोक रहा है
मैं अपनी इच्छा से तुम्हें दे रहा हूँ
मैं अधिक स्वतंत्र हो सकूँगा उसके बिना।

मैं उसे संबोधित करूँगा
मुक्त होने का जिसने आह्वान दिया था
अब मैं एक बार फिर देखना चाहता हूँ—
जिससे मैं मुक्त हो चुका हूँ—
मुक्त, स्वतंत्र और दृढ़ संकल्प
मुझे कोई झेंप नहीं होती
मित्रों के चित्रों और भूतपूर्व वस्तुओं के रूप से।

मैं जा रहा हूँ
मैं जल्दी में हूँ
पर एक बार आखिरी बार
उन सब की परिक्रमा करूँगा
जिन्हें मैं छोड़कर जा रहा हूँ।

आलोक

हम किस तरह पा सकेंगे
तुम्हारे मुख-कमल के दर्शन
हर चीज़ का मर्म समझने में समर्थ यह मुख
अथाह है अथाह भावनाओं और विवेक से अधिक
अदृश्य, अश्रव्य और अनुभवातीत है वह

हृदय, विवेक और श्रम—सबका
आह्वान करता हूँ आज के दिन।
कौन जान सका है उस शक्ति को
जिसका न स्वाद है, न रूप, न आवाज़
जिसका अंत है, न आरंभ ?

अंधकार में जब सब कुछ रुक जाता है
रुक जाती है मरुभूमि की प्यास
और समुद्रों का नमक।

मैं तुम्हारे चमकने की प्रतीक्षा करूँगा
तुम्हारे मुख-कमल के सम्मुख
बंद कर देते हैं चमकना
सूर्य और चंद्रमा,
तारे ज्योति और विद्युत,
उत्तरी ध्रुव की लालिमा
और इंद्रधनुष के सब रंग।

चमक रहा है तुम्हारा मुख-कमल
हर चीज़ चमक रही है उसके आलोक से।
तुम्हारी आभा का एक कण
चमक रहा है अंधकार में।
और मेरी बंद आँखों में
चमक रहा है तुम्हारा अद्‌भुत
आलोक।

तुम्हारी मुस्कुराहट

तट पर हम गले मिले और अलग हुए,
सुनहरी लहरों में छिप गई हमारी नाव!

द्वीप पर हम थे, हमारा पुराना घर था
मंदिर की चावी हमारे पास थी
हमारे पास थी अपनी गुफा
अपनी चट्टानें, देवदार और समुद्री चिड़ियाँ
हमारी अपनी थी दलदल
और हमारे ऊपर तारे भी अपने।

हम छोड़ देंगे द्वीप
निकल जायेंगे अपने ठिकाने की तरफ
हम लौटेंगे, पर सिर्फ रात में।
वंधुओ, कल हम जल्दी उठेंगे
सूर्योदय से पहले
जव चमकीली आभा छायी होती है पूरव में
जव नींद से सिर्फ पृथ्वी उठ रही होती है।
लोग अभी सो रहे होंगे,
उनकी चिंताओं के सीमांत से वाहर
हम मुक्त होकर जान सकेंगे अपने आपको।

हम दूसरे लोगों से निश्चित ही भिन्न होंगे।

सीमांत के पास पहुँचने पर
चुप्पी और खामोशी में हम देखेंगे—
मौन वैठा हुआ वह उत्तर में हमें कुछ कहेगा।
ओर सुवह, वताओ किसे ले गई थीं तुम अंधकार में
और किसका स्वागत कर रही है
तुम्हारी मुस्कराहट ?

तुम्हें समझे बिना

हमें ज्ञान नहीं—
कव शक्ति संपन्न होता है तुम्हारा शब्द।

कभी-कभी तुम साधारण व्यक्ति वन जाते हो
और अपना रूप छिपा कर
वैठ जाते हो ऐसे मूर्खों के वीच
जिनका वहुत सीमित होता है ज्ञान।

कभी-कभी तुम वोलते हो इस तरह
जो न समझे जाने पर
तुम्हें कोई दुख होता ही नहीं।

कभी-कभी अज्ञानियों की ओर
इतनी मृदुता के साथ देखते हो
कि मुझे ईर्ष्या होती है उनके अज्ञान से।
तुम्हें अपना रूप दिखाने की जैसे चिंता ही नहीं।
और जव सुनते हो वीते दिनों की वातें
तुम झुका देते हो अपनी नज़रें
खोजने लगते हो जैसे आसान से भी आसान शब्द।

कितना कठिन है मालूम करना
तुम्हारे तमाम इरादे !
कितना कठिन हो गया है
तुम्हारा अनुकरण करना !

कल ही की तो वात है
जव तुम भालुओं से वातें कर रहे थे
मुझे लगा था कि वे तुमसे दूर जा रहे हैं
तुम्हें समझे बिना।

सुरक्षित रखूँगा

मेरे समीप आओ,
ओ आलोकमय,
मैं डराऊँगा नहीं किसी चीज़ से।

कल तुम मेरे पास आना चाहते थे
पर तब मेरे विचार भटक गये थे
फिसल गई थीं मेरी नज़रें
मैं तुम्हें देख नहीं पाया था।

जब तुम जाने लगे
मुझे महसूस हुई तुम्हारी साँस
पर तब तो देर हो चुकी थी
और आज मैं वह सब कुछ छोड़ कर जा रहा हूँ
जिसने मुझे रोके रखा।
खामोशी के हवाले कर दूँगा अपने विचार,
सताये हुओं को
आमंत्रित करूँगा अपने मन की खुशियों में।

मैं अब शांत रहूँगा,
कोई भी मुझे बाधा नहीं पहुँचा सकेगा।
जीवन की आकस्मिक ध्वनियाँ
अब मुझे उद्वेलित नहीं कर सकतीं।

मैं प्रतीक्षा करूँगा
मैं जानता हूँ तुम मुझे छोड़कर नहीं जाओगे
मैं तुम्हारी छवि को
सुरक्षित रखूँगा
यहाँ की खामोशी में।

प्रेम

यह दिन का समय था
बहुत सारे लोग आये हमारे पास एक साथ
लेते आये किन्हीं अपरिचित लोगों को।

आरंभ में कुछ भी न पूछ सका उनके विषय में
वे ऐसी भाषाओं में बातें कर रहे थे
जिन्हें मैं समझ नहीं पा रहा था
मैं बस मुस्कराता रहा
उनकी अपरिचित वाणी सुनते हुए।

कुछ की आवाज़ें
पहाड़ी बाज़ों की चीखों जैसी थीं
कुछ की सांपों की सरसराहट-सी,
कभी-कभी मुझे उनमें भेड़ियों की गुर्राहट भी सुनाई दी
उनकी वाणी में चमक थी धातुओं की,
भयावह लग रहे थे उनके शब्द।
भीतर ही भीतर गिर रहे थे उनके शब्द।
भीतर ही भीतर टकरा रही थीं पहाड़ी चट्टानें,
भीतर ही भीतर गिर रहे थे ओले,
गूँज रहे थे भीतर के जल-प्रपात।
पर मैं बस मुस्कराता रहा
कैसे समझ पाता उनके अर्थ !

पर क्या यह नहीं हो सकता
कि वे अपनी भाषा में
दोहरा रहे थे हमारा वह प्रिय शब्द—
प्रेम ?

देखता आ रहा हूँ

एक अपरिचित व्यक्ति आकर रहने लगा
ठीक हमारे उद्यान के पास।
हर सुबह बजाता था वह अपनी गुसली
गाता था अपना कोई गीत।
हमें लगता था कभी कभी
वह एक ही गीत दुहराता है
पर हमेशा नया होता था
उस अपरिचित का गीत।
हमेशा कुछ लोग खड़े होते थे फाटक के पास।

हम बड़े हो गये थे
काम पर जाने लगा था भाई
विवाह योग्य हो गई थी बहन
पर वह अपरिचित अब भी गाता था
उससे अनुरोध करने गये—
वह हमारी बहन की शादी में गीत गाये।
हमने पूछा उससे—
कहाँ से लेता है वह शब्द नये नये ?
और इतनी देर तक
कैसे नये रह पाते हैं उसके गीत ?

वह जैसे हैरान हुआ
दाढ़ी ठीक करते हुए कहने लगा—
"मुझे लगता है मैं कल ही
आपके पास आ बसा हूँ
मैं अभी तक यह भी नहीं बता पाया
जिसे मैं अपने चारों ओर
देखता आ रहा हूँ।"

हीरा

पुनः वही दूत
पुनः तुम्हारा आदेश
और उपहार !

प्रभु, मेरे लिए तुमने अपना हीरा भेजा है
आदेश दिया है कि मैं उसे
अपने हार में धारण करूँ
पर तुम्हें मालूम है, प्रभु,
मेरा यह घर नकली है
और इतना बड़ा
जितनी बड़ी हो सकती है सिर्फ नकली चीज़ें।

तुम्हारा यह चमकता उपहार
खो जाएगा बेचमक खिलौनों के बीच
पर तुमने आदेश दिया है
मैं उसे पूरा करूँगा।

गह्वर

ओ सर्वशक्तिमान, तू सर्वत्र है
विद्यमान है हर चीज़ में
तू दिन खुलने से पहले हमें जगाता है
और सुलाता है अंधकार में।

तू राह दिखाता है हमें भटक जाने पर
पता नहीं किस ओर जाना हमें अच्छा लगा था
तीन दिन हम भटकते रहे
हमारे पास आग थी, शस्त्र और परिधान थे…
बहुत सारे पक्षी और वन्य जीव थे चारों ओर
और ऊपर थे सूर्यास्त और सूर्योदय
और तीव्र सुगंध लिए हवाएँ।

पहले हम विस्तृत घाटी से होकर गये
खेत थे हरे-भरे
और नीलिमा लिए खुला विस्तार
फिर हम वन और काई से ढके दलदल से गुज़रे
खिल रही थी धूपचंदन
और हम काई से बचकर निकले
निकल गये अथाह खिड़कियाँ छोड़ते
धूप का अनुसरण करते रहे।
घने वादल छा रहे थे
अनुभव हो रहा था हवा का चलना
भीगे हाथों से पकड़ते रहे उसकी लहरें
वे शांत पड़ गई थीं
कम हो जाते रहे थे वन
हम चट्टानों की पंक्तियों में से होकर निकले।
उज्जवल धमनियों की तरह

व्यस्त थे पत्थरों से ढेर
सृष्टि के प्राचीन कार्य में।

उतराइयों से होकर हम नीचे आये
कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था
अँधेरा हो चला था
हम विशाल मंदिर की सीढ़ियों से नीचे उतरे
वादल और अंधकार से घिरे हुए।

नीचे धुँध फैल रही थी
और अधिक ढलानदार हो रही थीं सीढ़ियाँ
कठिन हो रहा था काई पर से उतरना
कुछ भी अनुभव नहीं हो रहा था पाँवों को अपने नीचे
हम यहीं रात वितायेंगे
सो लेंगे सुवह तक
काई से ढकी चट्टान पर।
नींद खुलने पर हमें सुनाई देगी
अस्पष्ट उड़ानों की सीटियों जैसी आवाज़।
वहुत दूर एक समान काँप रही है एक चीख
चमक उठा है पूरव।
धुँध की परतों ने ढक रखा है घाटी को
वर्फ़ की तरह तीखी ये परतें
नीली तहों की तरह सट गई हैं एक साथ।

हम वहुत देर तक बैठे रहे
संसार की सीमाओं से वाहर
धुँध के छंट जाने तक
एक दीवार खड़ी हो रही थी हमारे ऊपर
और नीचे चमक रहा था
नीला गह्वर।

दूर नहीं गये

जो काम तुमने शुरू किया
उसे तुमने मेरे लिए छोड़ा,

तुम्हारी इच्छा थी कि मैं उसे जारी रखूँ।
तुम्हें मुझ पर कितना विश्वास है—
मैं इसे अनुभव कर रहा हूँ
मैं काम के प्रति सचेत कर रहा हूँ और सावधान
तुम स्वयं भी तो हमेशा व्यस्त रहे इसी काम में।

मैं तुम्हारी मेज के पास वैठूँगा,
अपने हाथों में लूँगा तुम्हारी कलम।
चीज़ों को मैं उनकी पहले की जगहों में रखूँगा।
चाहता हूँ कि मुझे उनसे सहायता मिल सके।
पर जव तुम चल दिये
वहुत कुछ अनकहा छोड़ गये।

शोर और कोलाहल सुनाई दे रहा है
व्यापारियों की खिड़कियों के नीचे,
घोड़ों की भारी टापें पड़ रही हैं पत्थरों पर।
सुनाई दे रही हैं पट्टियों की चरमराहट
और हवा की सीटियाँ छतों के नीचे
और वंदरगाह के पास पालों की सरसराहट।
सुनाई दे रही है

जहाजों के लंगर डालने की आवाज
और समुद्री पक्षियों की चहक।
मैं तुमसे पूछ नहीं पाया—
इन सबसे क्या तुम्हारी शांति भंग नहीं होती ?
या जो कुछ भी जीवंत है
क्या तुम्हें उसमें प्रेरणा मिलती रही है ?

जितना भी मुझे ज्ञान है
अपने फैसलों में तुम इस ज़मीन से कभी
दूर नहीं गये।

हमारे लिए ?

बहुत सुन्दरताएँ हैं जीवन में।

हर रोज़
सुबह-सुबह हमारे तट के पास से
गुज़रता है एक अज्ञात गायक।
हर रोज़
सुबह सुबह प्रकट होता है
धुँध में से एक नया गीत।

हर रोज़
चट्टानों के पीछे छिप जाता है गायक।
लगता है हम कभी नहीं जान पायेंगे उसे—
कौन है यह गायक ?
और कहाँ जाता है वह
हर रोज़ ?

किसके लिए गाता है वह
एक नया गीत
हर रोज़ ?

कौन-सी हैं वे आशाएँ
जिनसे भरा होता है उसका हृदय ?
किसके लिए होते हैं उसके गीत ?
संभव है
हमारे लिए ?

खुशियाँ मना, ओ मन

मेरी खिडकियों के बाहर
फिर से चमकने लगा है सूर्य,
इंद्रधनुष पहन लिए हैं घास की पत्तियों ने,
रोशनियों के झण्डे लहरा रहे हैं दीवारों पर,
खुशियों से भरे उल्लास में नाच रही हैं हवाएँ।

ओ मेरे मन, इतना बेचैन तू किस कारण ?
तुझे अज्ञात ने डरा दिया है क्या ?
तेरी खातिर ही तो अंधकार से ढँक गया है सूर्य
झुक गई हैं नृत्य में डूबी पत्तियाँ !

ओ मन, कल तक तेरा कितना सीमित था ज्ञान !
और अज्ञान—कितना विशाल !
वर्फ़ के तूफान के सामने तू जितना साधनहीन था
उतना ही अधिक तू अपने को साधन संपन्न
समझने लगा था।
पर तेरी खातिर आज प्रकट हुआ है सूर्य,
तेरी खातिर ही लहरा रही हैं रोशनियों की झंडियाँ,
और पत्तियाँ तेरी ही खातिर लाई हैं खुशियाँ।

तू समृद्ध है, धनी है ओ मेरे मन !
ज्ञान आ रहा है तेरे समीप,
चमक रही है तेरे ऊपर आलोक-पताका,
खुशियाँ मना, ओ मेरे मन !

और प्रेम

उस मित्रता का क्या हुआ
जब सौ सौ द्वारों वाले उस निवास में
प्रवेश करने की हमें अनुमति मिली थी ?

ओ शक्तिमान, दण्ड न देना उसे मित्र को
जो कभी तुम्हें प्रिय था,
जो तुम पर क्रोधित हुआ था।
सब कह रहे हैं तुमने संयम नहीं खोया।
कब देख सकूँगा मैं भी तुम्हें—
हृदय से आश्वस्त और शांत ?

मेरे शब्द-स्रोत तो तुम्हें ज्ञात हैं।
ये रहे मेरे पाप और पुण्य !
मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ उन्हें तुम्हारे सामने,
स्वतंत्र हो तुम उनमें से किसी को भी चुनने के लिए।
यह रहा मेरा ज्ञान
और यह—अज्ञान,
चुनो जो भी पसंद हो तुम्हें,
मेरे पास बची रहे केवल निष्ठा तुम्हारे प्रति !
यह रही शुचिता
और यह—नीचता,
इनमें से किसी की भी आवश्यकता नहीं मुझे।
ये रहे भले और बुरे विचार
इन्हें भी मैं सौंपता हूँ तुम्हें।

सौंपता हूँ तुम्हें सच्चाई के सपने
और वे सपने भी
जो ले जाते हैं पाप की तरफ।

मेरे लिए बस इतना ही करना
कि मेरे पास बची रहे तुम्हारे प्रति निष्ठा
और प्रेम !

क्रम तीन : बालक के लिए

सजाये रखो

वालक, चीज़ों की प्रति सावधान रहना !
यह प्रायः ही होता है
जिस चीज़ के हम मालिक होते हैं
भरी होती है वह दुर्भावना और कुत्सित विचारों से,
विद्रोहों से अधिक खतरनाक होती है वह।
वर्षों हम अपने साथ रखते हैं एक दुष्ट व्यक्ति को,
हमें यह मालूम नहीं होता कि
वह हमारा दुश्मन है।
संपत्ति के आलोक में
छोटा-सा चाकू भी हमारा दुश्मन होता है।
दुश्मन होती है लाठी,
विद्रोह कर बैठते हैं दीये, बेंच और वाड़।
पुस्तकें चली जाती हैं पता नहीं कहाँ।
अत्यंत शांत चीज़ें
विद्रोह कर बैठती हैं कभी-कभी,
असम्भव है उनसे वच निकलना।
प्राणांतक प्रतिशोध की आग में
जलते रहते हो तुम कई कई वर्ष,
और सोच और ऊब के क्षणों में
स्नेह करते हो तुम अपने शत्रुओं से।
मनुष्य से यदि कोई वच निकलने से सफल भी रहा हो
शक्तिहीन पड़ जाता है वह चीज़ों के सामने।
विविध रंगों में चमकने लगती हैं तुम्हारी सब चीज़ें।
अपने जीवन को तुम
भली चीज़ों से ही
सजाये रखो !

एक दिन

ओ बालक, यह तुम्हारी भूल है,
बुराई तो है ही नहीं।
उसकी रचना ईश्वर से हो ही नहीं सकी।
यदि कुछ है तो यह अपूर्णता,
वह भी उतनी ही खतरनाक है
जितनी कि वह जिसे हम बुराई कहते हैं।

अंधकार और दैत्यों के सम्राट हैं ही नहीं
पर झूठ, क्रोध और मूर्खता की हर हरकत से
हम रचना करते हैं
कुरूप और भयावह असंख्य चीज़ों की।
वे नीच होती हैं
और खून की प्यासी।

हमारे पीछे-पीछे आती हैं वे
जिन्हें अपने हाथों रचा होता है हमने,
दिया होता है रूप और आकार।
बढ़ने न देना उनकी संख्या !

तुम्हारी बनाई चीज़ें
तुम्हारा ही भक्षण करने लगेंगी।
सावधान रहना भीड़ के प्रति !
ओ बालक, बहुत कठिन हो गया है जीवन,

याद रखना यह आदेश
तुम्हें जीना है, डरना नहीं है किसी से
स्वतंत्र रहना है और सशक्त ।
तभी सफल हो सकोगे प्रेम में।

कुत्सित वस्तुओं को
अच्छाइयाँ पसंद नहीं
वे सूख जायेंगी, नष्ट हो जायेंगी
एक दिन।

सहायता देगा

वालक, तुमसे फिर गलती हुई है।
तुमने कहा कि तुम्हें सिर्फ अपनी अनुभूतियों पर
विश्वास है।
आरंभ में इसकी प्रशंसा हो सकती है,
पर उन अनुभूतियों से हम कैसे निपटेंगे
तो ज्ञात नहीं आज तुम्हें
पर जिन्हें मैं जानता हूँ ?
अभी अपूर्ण है आरंभ की वे अनुभूतियाँ,
जिन पर, तुम कहते हो, विश्वास करो।

क्या तुम्हारे वश में है सुनने की शक्ति ?
कमज़ोर हैं तुम्हारी आँखें।
स्पर्श-शक्ति भी अविकसित है अभी।
अज्ञात अनुभूतियों के विषय में
तुमने मुझ पर विश्वास नहीं किया।
मैंने तुम से पानी की एक बूँदें देखने को कहा
विना ऐनक या लेंस के—
हवा में रह रहे कीटाणुओं के बारे में
कुछ बताने को कहा।
तुम मुस्करा दिये।
तुम चुप हो गये।
तुमने कोई उत्तर नहीं दिया।

ओ वालक, पथ प्रदर्शन पाते रहना
अपने मन से
जीवन में उसी से सहायता मिलेगी तुम्हें।

सब के सामने

तुम्हें रोना आ रहा था
पर मालूम नहीं था—रोना उचित होगा या नहीं।
तुम्हें डर लग रहा था रोने से
कि बहुत लोग देख रहे थे तुम्हारी तरफ।
लोगों के सामने क्या रोना ठीक होगा ?
उदात्त था तुम्हारे आँसुओं का स्रोत।

तुम्हें रोना आ रहा था
निर्दोष लोगों की मृत्यु पर।
तुम्हें दूसरे लोगों की भलाई के लिए शहीद
युवा सेनानियों पर आँसू वहाने की इच्छा हो रही थी।
उन सव पर तुम्हें रोना आ रहा था
जिन्होंने अपनी खुशियाँ न्योछावर कीं
दूसरों की जीत और दूसरों के दुखों के लिए।

पर क्या किया जाये
कि लोग तुम्हारे आँसू न देख सकें ?

वालक मेरे समीप आओ,
मैं अपने पहरावे से ढँक दूँगा तुम्हें।
तुम रो सकते हो,
मैं मुस्करा दूँगा इस तरह
कि लोग समझेंगे तुम मजाक कर रहे हो
या हँस रहे हो
या समझेंगे तुमने मेरे कान में कोई मज़ेदार वात कही है।

आखिर हम हँस तो सकते हैं
सवके सामने।

ईश्वर भला करेगा

मेरे पास आओ, बालक,
डरो मत !
तुम्हें डरना सिखाया है बड़ी उम्र के लोगों ने।
लोग सिर्फ डरा सकते हैं।

झँझावात और अंधकार, जल और आकाश,
कुछ भी तुम्हें डरा नहीं सका।

एक नंगी तलवार ने जीता तुम्हारा मन।
खिड़कियों की ओर बढ़ाये तुमने अपने हाथ,
अब तुम डर गये हो
शत्रुतापूर्ण लग रही है तुम्हें हर चीज़।

पर तुम मुझसे डरो नहीं,
मेरा एक मित्र छिपा बैठा है
तुम्हारे सब भय भगा देना वह दूर।
जब तुम्हें नींद आयेगी
मैं बुलाऊँगा तुम्हारे सिरहाने के पास
उसे जिसमें शक्ति है,
वह तुम्हारे कान में कुछ कहेगा।

तुम निर्भीक होकर उठोगे,
ईश्वर तुम्हारा भला करेगा।

क्यों नहीं मार सकते ?

वालक ने गुवरैला मारा
वह उसे ठीक से जानना चाहता था।

चिड़िया को मारा वालक ने
उसका अध्ययन करना चाहता था वह।

मार डाला वालक ने जानवर को
मात्र ज्ञान प्राप्त करने के लिए।

वालक ने पूछा : क्या वह
भलाई और ज्ञान की खातिर
मनुष्य को मार सकता है ?

वालक, यदि तुमने गुवरैला मारा
मारा चिड़िया और जानवर को
तो मनुष्य को
क्यों नहीं मार सकते ?

नहीं कर सकते

तुम्हारा अनुमान है
तुमने कार्य समाप्त कर दिया है ?
तीन प्रश्नों के उत्तर दो—
मुझे यह कैसे मालूम होगा
कव्वा कितने वर्ष जिया ?
सव से दूर के तारे का
फासला वहुत वड़ा है क्या ?

मैं अव क्या चाह रहा हूँ ?
वंधु एक वार फिर से क्या हमें मालूम नहीं ?
फिर से सव कुछ अज्ञात है हमारे लिए।
फिर से हमें करना होगा आरम्भ
और समाप्त हम
कुछ भी नहीं कर सकते।

गिनती न करना

बालक, झगड़ों को महत्व न देना !

याद रखना अजीव से होते हैं वड़े लोग।
सवसे वुरी वातें कहेंगे एक दूसरे के वारे में
और दूसरे ही दिन
शत्रुओं को मित्र कहने के लिए तैयार होंगे।
अपमानजनक शब्द कहेंगे
बचाने वाले मित्रों को।

अपने को यह समझाओ।
कि लोगों की कुटिलताएँ गहरी नहीं होतीं
उनके बारे और अधिक अच्छा सोचना
मित्रों और शत्रुओं की
गिनती न करना !

अनंत

बालक, तुम्हारा कहना है
साँझ तक निकल पड़ोगे यात्रा के लिए
पर प्रिय बालक, विलम्ब न करो
हम सुबह ही निकल पड़ेंगे तुम्हारे संग
प्रवेश करेंगे
मूक वृक्षों से भरे महकते वन में।
ओस की शीतल चमक में
उज्वल और सुंदर बादलों के नीचे
यात्रा पर निकलेंगे हम तुम्हारे साथ।

यदि चलने में तुमसे विलम्ब हुआ
इसका अर्थ होगा
कि तुम्हें अभी ज्ञात नहीं
कि हर्ष और आरंभ का अस्तित्व है
अस्तित्व है उस आदि और अनंत का।

जहाँ भेजा गया था

बालक, इस तरफ न आना
यहाँ वड़ी उम्र के लोग खेला करते हैं
फेकतें हैं तरह तरह की चीज़ें
तुम्हें आसानी से मार सकते हैं

पशुओं और मनुष्यों को कभी न छेड़ना
जव से व्यस्त हों खेलों में
विनाशकारी होते वड़ों के खेल
तुम्हारे खेलों के जैसे नहीं

ये वो खेल नहीं
जिनमें लकड़ी से वना गड़रिया होता है
और गोंद से चिपकाई ऊन वाली विनम्र भेड़ें
रुको, थक जायेंगे खेलने वाले
समाप्त हो जायेंगे उनके खेल
उसके बाद चले जाना
जहाँ भेजा था तुम्हें।

मिट्टी के नीचे

हमने फिर से
खोज निकाली हैं खोपड़ियाँ।
पर उनमें अंकित नहीं थे कोई चिन्ह।

एक खोपड़ी खंजर से खुदी पड़ी थी
और दूसरी—तीर से।
पर ये चिन्ह
हमारे लिए नहीं।

पास-पास पड़ी हुई थी अनाम खोपड़ियाँ
एक जैसी थी वे सभी।
सिक्के पड़े हुए थे उनके नीचे।
मिट चुके थे उन पर चेहरों के निशान।

प्रिय मित्र, तुम मुझे यहाँ धोखे से लाये हो।
हमें मिल नहीं सकेंगे
पावन चिन्ह
मिट्टी के नीचे।

दुहराने लगो

तुम चुप पड़ गये हो !
डरो नहीं अपनी बात कहने से।
तुम सोचते हो कि मुझे
ज्ञात है तुम्हारी कहानी
जिसे तुम कई वार मुझे सुना चुके हो।
यह सच है कि मैं यह कहानी
तुम्हारे मुख से कई वार सुन चुका हूँ।

स्नेह से भरे होते थे तुम्हारे शव्द
और आँखें मृदुल आभा से।
हमें अपनी कहानी फिर से सुनाओ !

हम हर सुवह उद्यान में आते हैं,
हर सुवह प्रसन्न होते हैं धूप पर।
वहार की वयार भी
दुहराती है अपने झोंके।
अपनी कथा को प्रदान करो
धूप की गरमाहट
और सुगंधित शव्द।

बहार की हवा की ही तरह
मुस्करा दो अपनी कहानी में।
स्पष्ट देखो हमेशा की तरह
जब अपनी कथा
दुहराने लगो।

चिरंतन के विषय में

तुम मुझे अप्रिय शब्द
क्यों कहना चाहते थे ?

तैयार है मेरा उत्तर।

पर इससे पहले तुम बताओ मुझे,
ठीक से सोचो और बताओ।
क्या तुम अपनी इच्छा कभी नहीं बदलोगे ?
क्या तुम उसके प्रति निष्ठावान बने रहोगे
जिससे मुझे डराने की कोशिश की थी ?
मैं अपने आपको जानता हूँ,
मैं तैयार हूँ अपना उत्तर भूल जाने के लिए।

देखो, जितनी देर हम बातें करते रहे
सब कुछ बदल गया है चारों तरफ।
नयी-नयी-सी हो गयी है हर चीज़।
वह जो हमें धमका रहा था
अब पास बुला रहा है।
जो हमें जानता था
वह चला गया है सदा के लिए।
हम स्वयं भी तो बदल गये हैं।
आकाश भी अब दूसरी तरह का है हमारे ऊपर
और हवा भी दूसरी तरह की।
सूर्य की किरणें भी
चमक रही हैं दूसरी ही तरह से।
आओ बंधु छोड़कर चल दें यह सब कुछ
जो बदल जाता है इतनी जल्दी से,

अन्त
जो हम
आओ विचार करें
उस चिरंतन के विषय में।

□□□

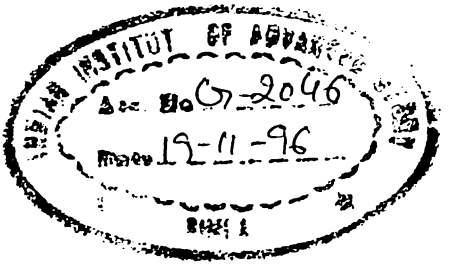

रेरिख केवल उत्कृष्ट और मौलिक चित्रकार ही नहीं बल्कि अनुभवी पुरातत्ववेत्ता, कवि, लेखक और सामाजिक कार्यकर्ता भी रहे हैं। अपने समय की सामाजिक-राजनैतिक समस्याओं, संस्कृति के अतीत और वर्तमान, विभिन्न कला और साहित्य आंदोलनों के प्रति वह अत्यंत सचेत और संवेदनशील रहे। संस्कृति की मनुष्य को मनुष्य बनाये रखने की क्षमता और सामर्थ्य पर रेरिख को जीवन पर्यंत अटूट विश्वास रहा और संभवतः इसी विश्वास ने ही उन्हें दूसरे क्षेत्रों की संस्कृति का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया। यूरोप केंद्रित चिंतन पद्धतियों से मुक्त निकोलाई रेरिख गैर यूरोपीय देशों और जातियों की संस्कृति में उच्च मानवीय मूल्यों का दर्शन पा सकने में सफल रहे। इसीलिए रेरिख उच्चतम अर्थों में सच्चे संस्कृति कर्मी के रूप में विश्व-भर में आदर पा सके।

रेरिख प्रखर चिंतक और चित्रकार होने के साथ-साथ समर्थ कवि भी थे। पर उनके रचनात्मक व्यक्तित्व का यह पक्ष अधिक उजागर नहीं हुआ है। उनकी कविताओं का पहला संकलन 'त्स्वेती मोरी' यों 1921 में प्रकाशित हो सका पर संकलन की अधिकांश रचनाओं से प्रबुद्ध रूसी पाठक पहले ही परिचित हो चुका था। कविताएँ उन्होंने अधिक नहीं लिखीं पर उनके कृतित्व में इन कविताओं का विशेष स्थान है। उ
कविता की समृद्ध परंपरा को आत्मसा
और वैचारिक उच्चता प्रदान करती हैं
इस दृष्टि से भी विस्मयकारी है कि रेरि
की छंद, लय, मात्रा और वाक्य रचन
का साहस कर सके। जहाँ तक वैचारिक पक्ष का सबध ह इन
कविताओं में प्राच्य अध्यात्मवाद, विवेकानंद और रवींद्रनाथ ठाकुर के
दर्शन का प्रभाव भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

Library IIAS, Shimla
H 891.71 R 628 S
G2046